कल्पवृक्ष

उत्तर-पुस्तिका

8

SOUVENIR
PUBLISHERS PVT. LTD.

कल्पवृक्ष - 8

पाठ - 1 निश्छल भाव

अभ्यास

बात-बात में

(क) धरती सभी जाति या धर्मों के लोगों को बराबर प्यार करती है।

(ख) चन्द्रमा की चाँदनी शीतलता बरसाने के लिए कोई विशेष जगह नहीं ढूँढ़ती है। उसके लिए सभी जगह समान होती है।

(ग) (i) यह झोंका आँधी-तूफानों से लड़ता-भिड़ता रहता है।

(ii) 'झोंके का लिपटना' और 'अदब से झुकना' हवा के लिए प्रयुक्त हुए है। हवा सभी को अहसास कराती है कि उसके लिए सभी धर्म समान हैं

(iii) झोंका प्रेम सुमन की खुशबू से महका-महका है।

लिखित

1. (क) बादल (ख) भेद-भाव को दूर कर देता है। (ग) दीप्ति गुप्ता ने

2. (क) हवा के झोंके बहते समय मंदिर, गुरुद्वारे, मस्जिद और गिरजाघर जाते हैं।

(ख) बादलों से गिरने वाला जल सभी जगह समान रूप से गिरता है; जैसे - मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, और गिरजाघर पर।

(ग) सूरज की धूप किसी से भेदभाव नहीं करती है। वह मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और गिरजाघर - सभी जगह अपनी किरणें बिखेरती है।

(घ) आकाश बुलंद और विराट है।

(ङ) सूरज की धूप सुनहरी है।

(च) प्रसंग - प्रस्तुत पंक्तियाँ दीप्ति गुप्ता द्वारा रचित 'निश्छल भाव' कविता से ली गई हैं। इस कविता के माध्यम से वह बताना चाहती हैं कि हमें जिसने जीवन दिया है, वह किसी के साथ भेदभाव नहीं करता।

अर्थ - सूरज की सुनहरी धूप किसी के साथ भेदभाव नहीं करती। पर वह देर तक मंदिर में ठहरती है, उसके बाद मस्जिद पर छा जाती है। शाम ढलने पर गुरुद्वारे की दीवारों को छूते हुए गिरजाघर की चोटी को चूमकर चली जाती है। कहने का तात्पर्य है कि सूरज की धूप के लिए मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर आदि में कोई भेद नहीं है।

खेल शब्दों का

1. (क) र्+उ+प्+अ+ह्+अ+ल्+ई (ख) स्+अ+द्+भ्+आ+व्+अ+प्+ऊ+र्+ण्+अ
(ग) द्+उ+र्+भ्+आ+व्+अ (घ) ग्+उ+र्+उ+द्+व्+आ+र्+ए

2. विस्तृत - सुक्ष्म
खुशबू - बदबू
प्रेम - घृणा
धूप - छाँव
विशाल - लघु

3. बादल – मेघ धन
जल – पानी नीर
हवा – वायु समीर
चाँद – शशि इंद्र
सूर्य – दिनकर दिवाकर
धरती – धरा जमीन

4. मेरे अंदर एक चाँद है, जिसकी रुपहली चाँदनी
में मस्जिद, मंदिर, गिरजाघर, और गुरुद्वारे
धरती पर एक हो जाते हैं।
उनकी सद्भावनापूर्ण परछाइयाँ,
देती हैं प्रेम की दुहाइयाँ।

पाठ – 2 अज़ीज़ का सपना

अभ्यास

बात-बात में

(क) अज़ीज़ जैसे बच्चों को सुबह पाँच बजे से लेकर रात आठ बजे तक काम करना पड़ता है। केवल दोपहर को खाना खाने के लिए एक घंटे की छुट्टी मिलती है। काम से वे इतना थक जाते हैं कि खेल नहीं पाते और लेटते ही सो जाते हैं। उनकी दिनचर्या केवल मेहनत-मजदूरी तक ही सीमित हो जाती है।

(ख) अज़ीज़ जैसे बच्चों के प्रति हमारे मन में यही भाव उठता है कि हम किसी प्रकार से इनकी मदद करें और इनके बचपन को संवारे। हमें बाल श्रमिकों की समस्या के प्रति सचेत होना चाहिए।

(ग) अध्यापक की सहायता से छात्र स्वयं करें।

लिखित

1. (क) बुरा (ख) पिता (ग) अज़ीज़

2. (क) कारखाने के मालिक ने अपनी शान दिखाते हुए कहा कि यह हमारा कारखाना है।

   (ख) कहानी के अंत में सबकी प्रसन्नता का कारण था कि अज़ीज़ अपने अब्बा और अम्मी के साथ घर जा रहा था। अब वह स्कूल भी जा सकेगा।

   (ग) कारखाने के मालिक को कालीन बनाने की जगह दिखाने में संकोच हो रहा था क्योंकि वहाँ वह बच्चों से गैरकानूनी ढंग से काम करवाता था।

   (घ) कारखाने में बच्चों का समूह कालीन बनाने का काम कर रहा था।

   (ङ) अखबार के पहले पन्ने पर खबर छपी थी, “स्थानीय कालीन कारखाने पर छापा: 10 बच्चे मुक्त।”

   (च) “मैं अज़ीज़ हूँ”, यह आवाज कारखाने में काम करने वाले एक बालक की थी जो पतला-सांवला और लगभग दस साल का था। इसके माध्यम से विक्की कारखाने तक अपने माता-पिता के साथ पहुँचा।

3. (क) मालिक ने मेहरा जी से
   (ख) अज़ीज़ ने दिव्या से

खेल शब्दों का

1. (क) मिश्रित वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) सरल वाक्य
2. व्यक्तिवाचक संज्ञा - विक्की दिव्या रविवार
   जातिवाचक संज्ञा - बच्चा दफ्तर कारखाना
   भाववाचक संज्ञा - प्रसन्नता बिक्री खेल
3.

संज्ञा	निर्विभक्ति रूप	सविभक्ति/निर्यक रूप
बच्चा	बच्चे	बच्चों ने/को/से
कमरा	कमरे	कमरों को/से
कालीन	कालीन	कालीनों को/से
लोग	लोग	लोगों ने/को/से
किताब	किताबें	किताब को/से
पेड़	पेड़	पेड़ों ने/को/से
कटोरी	कटोरियाँ	कटोरियों को/से
पत्र	पत्र	पत्रों ने/को/से

पाठ - 3 सत्साहसी

अभ्यास

बात-बात में

(क) सत्साहसी व्यक्ति के आस-पास भय नहीं फटकता क्योंकि वह सर्वोच्च श्रेणी के साहस से युक्त होता है।

(ख) मारवाड़ के लोग बुद्धन को उनकी वीरता और सत्साहस के लिए याद करते हैं।

(ग) कर्तव्यपरायणता, हृदय-उदारता और चरित्र की दृढ़ता जैसे गुणों से उत्पन्न हुआ साहस ही सत्साहस है।

लिखित

1. (क) कर्तव्य का विचार (ख) बुद्धन सिंह (ग) मौरूदा गाँव
2. (क) हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता के साथ साथ जब तक 'कर्तव्यपरायणता' का गुण सम्मिलित न हो तब तक साहस निस्तेज-सा प्रतीत होता है।

   (ख) सत्साहसी व्यक्ति गुप्त शक्ति के बल पर दूसरे मनुष्य को दु:ख से बचाने के लिए प्राण तक देने को प्रस्तुत हो जाता है। धर्म, देश, जाति और परिवार वालों के लिए नहीं, अपितु संकट में पड़े हुए अपरिचित व्यक्ति के सहायतार्थ भी उसी शक्ति की प्रेरणा से वह संकटों का सामना करने को तैयार हो जाता है।

(ग) सर्वोच्च श्रेणी का साहस हृदय की पवित्रता, उदारता, चरित्र की दृढ़ता व कर्तव्यपरायणता जैसे गुणों को कहते हैं।

(घ) संसार के काम, बड़े अथवा छोटे साहस के बिना नहीं होते। बिना किसी प्रकार का साहस दिखलाए किसी जाति या किसी देश का इतिहास ही नहीं बन सकता। अपने साहस के कारण ही अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि आज हमारे हृदयों में बसे हैं।

(ङ) साहस का मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व है। साहस के बिना संसार का कोई काम आसान नहीं चाहे वह छोटा-सा काम हो या बहुत बड़ा।

(च) साहसी व्यक्ति में ज्ञान की कमी अवश्य पाई जाती है- क्योंकि वे बेपरवाह होते हैं और केवल साहस का ही प्रदर्शन करते हैं।

3. (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) सही

खेल शब्दों का

1. (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य (ग) संयुक्त वाक्य
2. (क) सं - महापुरुष, वि - साहसी (ख) सं - मनुष्य, वि - साहस
   (ग) सं - मनुष्य, वि - सत्साहसी (घ) सं - व्यक्ति, वि - सत्साहसी
3. (क) जिसे, उसे - संबंधवाचक सर्वनाम
   (ख) किसने - प्रश्नवाचक सर्वनाम
   (ग) कुछ - अनिश्चयवाचक सर्वनाम
   (घ) यह - निश्चयवाचक सर्वनाम

पाठ - 4 वरदान

अभ्यास

बात-बात में

(क) 'वरदान' कविता के कवि रवींद्रनाथ टैगोर हैं।

(ख) कवि विपत्तियों से भयभीत नहीं होना चाहता।

(ग) कवि दुखों पर विजय पाना चाहता है।

(घ) कवि दीनता स्वीकार करके अवश नहीं बनना चाहता।

(ङ) कवि ईश्वर से संकट-सागर में तैरने की शक्ति माँग रहा है।

लिखित

1. (क) विपत्तियों से (ख) दुखों पर (ग) दीनता
2. (क) कवि विपत्तियों से रक्षा के स्थान पर ईश्वर से भयभीत न होने का वरदान माँग रहा है।
   (ख) ईश्वरीय सहायता न मिलने पर भी कवि दीनता स्वीकार करके अवश नहीं बनना चाहता।
   (ग) कवि के भाग्य में विपत्तियाँ, दु:ख, दीनता, याचना, उपहास आदि आया है।

(घ) 'मुझे बचा ले' इस प्रार्थना के स्थान पर कवि ईश्वर से संकट सागर में तैरते रहने की शक्ति माँग रहा है।

(ङ) जब दुख भरी रातों में सारी दुनिया उनका उपहास करेगी तब कवि शंकित नहीं होना चाहता।

(च) कवि ने इस कविता में कर्मठता, साहस, ईश्वर पर सुख-दुःख में समान श्रद्धा तथा आत्मशक्ति पर विश्वास का संदेश बड़े ही सुंदर ढंग से दिया है।

(छ) 'वरदान' कविता में कवि ने ये वरदान मांगे हैं – विपत्तियों से भयभीत न होऊँ, दुखों पर विजय पाऊँ, दीनता स्वीकार करके अवश न बनूँ और जब सारी दुनिया मेरा उपहास करे, तब मैं शंकित न होऊँ।

(ज) 'वरदान' कविता जीवन के लिए कर्मठता का तथा स्वतंत्रतापूर्वक संघर्षरत रहने का संदेश देती है। विपत्तियाँ मनुष्य के बुद्धि, बल, साहस और कार्य-कुशलता के लिए कसौटी के समान है।

(झ) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि प्रभु से कह रहे हैं कि मैं यह प्रार्थना लेकर तेरे दर पर नहीं आया कि मुझे बचा ले। मैं तो केवल संसार रूपी संकट-सागर में तैरते रहने की शक्ति माँग रहा हूँ अर्थात मुझे केवल शक्ति प्रदान करो कि मैं सभी विघ्न-बाधाओं का सामना कर सकूँ।

खेल शब्दों का

1. (क) नास्तिक (ख) शंकित (ग) शरणार्थी (घ) आस्तिक
2. (क) प्रार्थना – विनती वंदना
   (ख) रात – रात्रि निशा
   (ग) प्रभु – ईश्वर भगवान
   (घ) चित्त – मन अंतःकरण
3. (क) सहायता – हमें सदैव गरीबों की सहायता करनी चाहिए।
   (ख) आशीर्वाद – मोहन के पिता जी ने उसे सफलता का आशीर्वाद दिया।
   (ग) सांत्वना – छात्र के परीक्षा में असफल होने पर अध्यापक ने उसे सांत्वना दी।
   (घ) रक्षा – हमारे देश के वीर सैनिक देश की रक्षा के लिया तत्पर रहते हैं।

पाठ – 5 पुरुषार्थ और संलग्नता

अभ्यास

बात-बात में

(क) जगदीशचन्द्र बसु विज्ञान के लिए विदेश गए थे।

(ख) चेचक के टीके के उपचार का मजाक उड़ाया गया।

(ग) विपत्तियों के डर से पुरुषार्थ-हीन नीच आदमी बैठा रहता है।

(घ) भाग्यवाद की प्रधानता होने के कारण भारतवर्ष में पुरुषार्थ का ह्रास दिखाई देता है।

(ङ) उत्साह मनुष्य को वीर बना देता है।

लिखित

1. (क) विराटराज (ख) बत्तीसवीं (ग) भाग्यवाद
2. (क) न्यूटन की एक पुस्तक की पांडुलिपि पर उसके कुत्ते ने लैंप गिरा दिया था जिससे वह जल गई थी।

   (ख) राबर्टब्रूस ने मकड़ी को एक तार को इस पार से उस पार ले जाने में होने वाली असफलताओं का सामना करते-करते बत्तीसवीं बार सफलता प्राप्त करते देखा।

   (ग) राइट ब्रदर्स के पिता जी ने यह कहकर उनका मजाक उड़ाया कि मनुष्य के लिए हवा में उड़ना असंभव है और संभव भी हो तो ओहियो का (अमेरिका का वह नगर जहाँ वे रहते थे) कोई आदमी ऐसा नहीं कर सकता।

   (घ) पुरुषार्थ का अर्थ है- संकल्प को दृढ़ बनाकर कार्य में संलग्न हो जाना और आपत्तियों से विचलित न होना।

   (ङ) मनुष्य का बहुधंधी होना ठीक नहीं। मनुष्य को उतना ही काम हाथ में लेना चाहिए जितना कि वह सफलतापूर्वक कर सके और फिर अपने ध्यान को उसी लक्ष्य पर जमा दे।

   (च) लक्ष्यहीन मनुष्य कभी सफल नहीं हो सकता क्योंकि उसकी शक्तियाँ केंद्रित नहीं रहती हैं।

   (छ) एक बार गुरु द्रोणाचार्य से अन्य राजकुमारों ने शिकायत की कि वे अर्जुन के ऊपर अधिक कृपा करते हैं तो उन्होंने एक दिन शिक्षा के समय राजकुमारों से चिड़िया की आँख पर निशाना लगाने को कहा। एक-एक शिष्य से पूछा कि वह क्या देखता है? किसी ने कहा- व्यायामशाला में खड़ा हुआ पेड़ और उस पर बैठी हुई चिड़िया देखता हूँ। केवल अर्जुन ने कहा कि उन्हें तो केवल चिड़िया की आँख दिखाई देती है। लक्ष्य मात्र पर एकाग्रता के साथ दृष्टि रखने के लिए ही उनके गुरुदेव उन पर प्रसन्न थे।

   (ज) न्यूटन के नौकर ने उस चार्ट को फाड़कर फेंक दिया, जिसपर दिन-प्रतिदिन वह अपने निरीक्षण का फल लिखता था। कागज के फट जाने पर न्यूटन सावधानी के साथ फिर से यंत्र पर परिश्रम करके अपने निरीक्षण और प्रयोगों को अंकित करने लग गया।

   (झ) पुरुषार्थी मनुष्य दूसरों से कई प्रकार से भिन्न होता है। वह न देव को दोष देता है न समय को और न ही परिस्थितियों को। वह स्वयं उन्हें अनुकूल बना देता है।

   (ञ) पुरुषार्थी धैर्यपूर्वक अपने कार्य में लगा रहता है। वह इस बात की परवाह नहीं करता है कि कोई उसके लिए क्या कह रहा है या उसका मजाक उड़ा रहा है। वह अपने पुरुषार्थ पर यकीन रखता था।

खेल शब्दों का

1. (क) कर – करना, हाथ   बस – बसना, बस वाहन
   कल – बीता हुआ कल, आने वाला कल   जल – पानी, पराजय
   फल – खाने वाला फल, परिणाम   हार – गले का हार, जलना
2. (क) पुल्लिंग (ख) स्त्रीलिंग (ग) पुल्लिंग (घ) पुल्लिंग (ङ) स्त्रीलिंग
3. कर्मठ – आलसी   निश्चय – अनिश्चिय   विजय – पराजय
   प्रारंभ – अंत   सफलता – असफलता   वीर – कायर

पाठ – 6 लंचबॉक्स

अभ्यास

बात-बात में

(क) नेहा समझ गई थी कि जरूर दाल में कुछ काला है। लेकिन वह घबराई नहीं। बल्कि उसके मुँह पर हल्की मुस्कान खिल गयी। लेकिन क्षणभर के बाद ही उसने अपने मुख पर परेशानी के भाव उभारे और कहा कि उसका लंचबॉक्स स्कूल में ही छूट गया है।

(ख) पुलिस को विद्यालय में प्रधानाचार्य ने बुलाया।

(ग) स्कूल की छुट्टी होने पर नेहा घर की ओर जा रही थी।

(घ) नेहा के पास दो व्यक्ति आए और उन्होंने नेहा से कहा कि उसकी माँ किसी कार से टकरा गयी हैं।

(ङ) लंचबॉक्स खोलने पर उसमें से धूल-मिट्टी निकाली।

लिखित

1. (क) अपोलो (ख) प्रधानाचार्य (ग) पिता जी के
2. (क) नेहा ने बदमाशों को स्कूल वापस जाने का कारण बताया कि माँ ने एक जैसे दो लंचबॉक्स खरीदे थे। वे अपने गहने एक लंचबॉक्स में रखती हैं और मैं गलती से आज गहनों वाला लंचबॉक्स ले आई।

   (ख) लंचबॉक्स खोलते ही बदमाश का चेहरा तमतमा गया क्योंकि उसमें धूल मिट्टी भरी हुई थी।

   (ग) उन व्यक्तियों ने नेहा को अपने साथ ले जाने के लिए कारण बताया कि उसकी माँ किसी काम से सड़क पर निकली थी और एक कार से टकरा गईं। उन्हें चोट आई है।

   (घ) उन लोगों को न जानते हुए भी नेहा उनके साथ इसलिए चली गई क्योंकि उन्होंने उससे कहा था कि वे उसके पापा के ऑफिस में काम करते हैं।

   (ङ) जब वे लोग नेहा को अस्पताल ले जाने की बजाय अस्पताल की ठीक विपरीत दिशा में ले जा रहे थे तो नेहा समझ गई कि यह लोग जरूर गुंडे-बदमाश हैं।

(च) छात्र स्वयं करें।

(छ) नेहा ने बदमाशों को धोखा देने के लिए उनसे कहा कि वह अपना लंचबॉक्स स्कूल में ही भूल गई है। जब बदमाशों ने उससे कहा कि क्या लंचबॉक्स तुम्हें अपनी माँ से भी प्यारा है। तो उसने कहा कि मैं गलती से माँ के गहनों वाला लंचबॉक्स ले आई थी। मुझे उसे लाने के लिए वापस जाना होगा।

(ज) जब वे लोग नेहा को अपोलो अस्पताल की ठीक विपरीत दिखा में एक सुनसान इलाके में ले जाने लगे तो नेहा समझ गई कि जरूर दाल में कुछ काला है।

(झ) नेहा इतनी बड़ी मुसीबत आने पर भी घबराई नही। उसने हिम्मत से काम लिया। अत: हम कह सकते हैं कि नेहा समझदार व साहसी लड़की थी।

(ञ) जब नेहा समझ गई कि वे लोग गुंडे-बदमाश हैं तो वह किसी तरह योजना बनाकर उन्हें वापस स्कूल ले आई और उन्हें गेट पर ही रोककर सीधे प्रधानाचार्य के पास पहुँच गई।

खेल शब्दों का

1. कान - कर्ण, श्रवण   कोमल - मृदु, नरम   सूरज - सूर्य, भास्कर
   रास्ता - मार्ग, पथ   आँख - अक्षि, चक्षु   हाथ - हस्त, भुज
   रात - रात्रि, निशा   गाँव - ग्राम, पुर
2. (क) गणितज्ञ (ख) मितभाषी (ग) वार्षिक (घ) सर्वज्ञ (ङ) दुर्गम
3. (क) आज सुबह माता जी ने हीरे जड़ा कंगन डिब्बे में रखा।
   (ख) अचानक कार तेजी से एक ओर मुड़ी।
   (ग) पुलिस के साथ हथियारबंद जवान भी मौजूद थे।
   (घ) प्रधानाचार्य ने तुरंत फोन पर किसी से बात की।
   (ङ) हम दो साल पहले तुम्हारे घर आए थे।

पाठ - 7 कलाम की आत्मकथा

अभ्यास

बात-बात में

(क) नमाज के बारे में कलाम को विश्वास था कि ये बातें ईश्वर तक अवश्य पहुँच जाती हैं।

(ख) 22 मई, 1989 को अग्नि मिसाइल का परीक्षण किया गया।

(ग) कलाम के पिता बुद्धिमान और उदार व्यक्ति थे।

(घ) कलाम का जन्म मद्रास (अब तमिलनाडु) राज्य के रामेश्वरम् कस्बे में हुआ रहा।

(ङ) शमसुद्दीन अखबारों के वितरण का कार्य करते थे।

लिखित

1. (क) आशिसम्मा (ख) पंद्रह (ग) तमिल
2. (क) आपातकाल घोषित होने पर पहला नतीजा यह निकला कि रामेश्वरम स्टेशन पर गाड़ी ठहरना बंद का दिया गया।

   (ख) जब तुम नमाज पढ़ते तो तो तुम अपने शरीर से इतर ब्रह्मांड का एक हिस्सा बन जाते हो, जिससे दौलत, आयु, जाति या धर्म-पंथ का कोई भेदभाव नहीं होता।

   (ग) कलाम चूने-पत्थर व ईंट से बने घर में रहते थे। यह इनका पुश्तैनी घर था।

   (घ) कलाम का बचपन बहुत ही निश्चिंतता और सादेपन से बीता।

   (ङ) कलाम को अपने माता-पिता से विरासत के रूप में ईमानदारी व आत्मानुशासन मिला और माँ से ईश्वर में विश्वास एवं करुणा का भाव मिले थे।

   (च) कलाम के जीवन पर उनके बहनोई जलालुद्दीन का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। वे हमेशा उन्हें शिक्षित व्यक्तियों, वैज्ञानिक खोजों, समकालीन साहित्य और चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियों के बारे में बताते रहते थे।

   (छ) रामेश्वरम् के प्राइमरी स्कूल में पाँचवीं कक्षा में कलाम के साथ एक घटना घटी। एक दिन उनकी कक्षा में नए शिक्षक आए। कलाम टोपी पहना करते थे और रामानंद शास्त्री के साथ अगली पंक्ति में बैठते थे। नए शिक्षक को यह पसंद नहीं आया कि एक मुस्लिम लड़का हिन्दू लड़के के साथ बैठे। उन्होंने कलाम को शिक्षक ने पीछे वाली बेंच पर भेज दिया।

   (ज) कलाम का जन्म तमिलनाडु के रामेश्वरम् कस्बे में हुआ था। उन्हें अपने माता-पिता से उच्च आदर्श, ईमानदारी एवं आत्मानुशासन जैसे श्रेष्ठ गुण मिले। बहनोई जलालुद्दीन और चचेरे भाई शमसुद्दीन का उनके बचपन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

   (झ) अग्नि मिसाइल का प्रक्षेपण 22 मई 1989 को हुआ। डॉ. अरुणाचलम्, जरनल के. एन. सिंह और डॉ. कमाल के अलावा रक्षा मंत्री भी वहाँ उप. स्थित थे। सुबह सात बजकर दस मिनट पर अग्नि को छोड़ा गया। यह पूरी तरह से सफल प्रक्षेपण था।

   (ञ) शमसुद्दीन कलाम के चचेरे भाई थे। जब द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर देश में आपातकाल घोषित किया गया, तब रामेश्वरम् स्टेशन पर गाड़ी का ठहरना बंद कर दिया गया। ऐसी स्थिति में अखबारों के बंडल रामेश्वरम और धनुषकोडि के बीच रामेश्वरम् रोड पर चलती ट्रेन से गिराने में कलाम शमसुद्दीन के मददगार बने।

खेल शब्दों का

1. (क) मैंने निकट जाकर उसका परिचय पूछा था।

   (ख) पत्र पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई थी।

(ग) अपने जन्मदिन पर उपहार पाकर मेरी खुशी की सीमा न थी।
(घ) मुझे पुरस्कार मिलने की खबर पूरे राज्य में फैल गई थी।
(ङ) खेल अध्यापिका ने सीमा को दौड़ लगाने को कहा था।

2. समुद्र - सागर जलधि
पिता - तात जनक
ईश्वर - प्रभु भगवान
घर - गृह आलय

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा - अब्दुल, शमसुद्दीन, मनीष, हिमालय
जातिवाचक संज्ञा - लड़के, परिवार, शिक्षक, मेहमान
भाववाचक संज्ञा - शोक, क्रूरता, मित्रता, बचपन

पाठ - 8 जलियाँवाला बाग में बसंत

अभ्यास

बात-बात में

(क) जलियाँवाला बाग को कवयित्री ने शोक स्थान बताया है।
(ख) कवयित्री कोयल से रोने का राग गाने के लिए कह रही है।
(ग) जलियाँवाला बाग खून से सना हुआ बताया गया था।
(घ) बाग में कोयल की जगह कौआ शोर मचा रहा था।
(ङ) वायु से मंद गति से बाग में आने को कहा जा रहा है।

लिखित

1. (क) शोक - स्थान (ख) सुभद्रा कुमारी चौहान (ग) भ्रमर का
2. (क) कवयित्री शुष्क पुष्प जलियाँवाला बाग की स्मृति में पूजा हेतु गिराने को कह रही है।
(ख) कवयित्री ओस से गीले व मंद सुगंध के पुष्प लाने के लिए कह रही है।
(ग) कवयित्री वसंत ऋतु को बाग में धीरे-धीरे आने के लिए कह रही है।
(घ) कविता के प्रारंभ में कवयित्री जलियाँवाला बाग के विषय में कह रही है कि यहाँ कोयल नहीं बल्कि कौए शोर मचा रहे हैं। काले-काले कीड़े-मकोड़े भँवरा होने का भ्रम पैदा कर रहे हैं। यहाँ अधखिली कलियाँ व सूखे हुए पुष्प हैं।
(ङ) कवयित्री वसंत को वायु के बारे में निर्देश दे रही है कि यहाँ जो वायु चले, उसे धीमी गति से चलाना।
(च) कोकिला को रोने का राग गाने और भ्रमर को कष्ट की कथा सुनाने के निर्देश दिए गए हैं।

(छ) कवयित्री उन कोमल बालकों और वृद्धों के लिए बाग में कलियाँ गिराने को कह रही है जिन्होंने तड़प-तड़पकर अपनी जान दे दी।

(ज) अंग्रेजी सरकार के सिपाहियों द्वारा निहत्थी जनता पर गोलियाँ बरसाकर अनेक बच्चों, युवाओं और वृद्धों की अकारण ही हत्या कर दी गई थी। इसी कारण कवयित्री ने जलियाँवाले बाग को 'शोक स्थान' कहा है।

(झ) (i) जलियाँवाला बाग की घटना पर वेदना व्यक्त करते हुए कवयित्री कह रही है कि जलियाँवाला बाग सुगंध रहित पराग दाग-सा बन गया है यह प्यारा बाग खून से लथपथ है। कवयित्री आगे कहती है – 'आओ ऋतुराज! इस शोकमग्न बाग में तुम धीरे-धीरे से प्रवेश करना।'

(ii) जलियाँवाले बाग की स्मृति में पूजा हेतु जो फूल लाए जाएँ, उनके लिए कवयित्री का कहना है कि वो फूल न ही बहुत ताजे हों और न ही बहुत ज्यादा सुगंधित अपितु ये फूल हल्की सुगंध वाले और कुछ-कुछ ओस से गीले होने चाहिए। यहाँ आकर उपहार-भाव नहीं दिखाना है बल्कि पूजा हेतु थोड़े फूल यहाँ चढ़ा देने हैं।

खेल शब्दों का

1. (क) सुगंध – खुशबू बाग – उपवन पुष्प – फूल
   कंटक – काटा भ्रमर – भँवरा कार – वाहन
2. कोकिला – कोयल प्रिय – प्यारा परिमल – सुगंध पुष्प – फूल
   भ्रमर – भँवरा राजा – नरेश ज्यादा – बहुत आना –आगमन हमें – हम सबको
3. (क) ऋतुराज – वसंत ऋतु – ऋतुराज के आते ही सुहावनी हवा बहने लगती है।
   (ख) भ्रमर – भँवरा – बगीचे में भ्रमर गुंजार कर रहे हैं।
   (ग) स्मृति – याद – जलियाँवाला बाग की स्मृति मात्र से दु:ख पहुँचता है।
   (घ) कोयल – कोकिला – कोयल की आवाज बहुत ही मधुर होती है।
   (ङ) दु:ख – कष्ट –जलियाँवाला बाग की घटना दिल को दु:ख में डुबा देती है।

पाठ – 9 सदाचार का तावीज़

अभ्यास

बात-बात में

(क) साधु ने तावीज़ का प्रयोग कुत्ते पर किया था।
(ख) भ्रष्टाचार का स्वरूप बहुत ही बारीक है।
(ग) आदमी आत्मा की पुकार के अनुसार कार्य करता है।
(घ) राजा ने भ्रष्टाचार ढूँढ़ने का कार्य 'विशेषज्ञ' जाति के पांच आदमियों को सौंपा।
(ङ) राज्य में सब जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ था।

लिखित

1. (क) बारीक (ख) विशेषज्ञ (ग) बुरे सपने

2. (क) कुत्ते के गले में तावीज़ बाँधने से उसने रोटी चुराना छोड़ दिया।

(ख) विशेषज्ञों ने भ्रष्टाचार को मिटाने की यह योजना बताई कि भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है, तो ठेकेदार है और ठेकेदार है तो अधिकारियों के लिए घूस है। ठेका मिट जाए तो उसकी घूस मिट जाए।

(ग) इकतीस तारीख को तावीज़ में से स्वर निकल रहे थे – 'अरे आज इकतीस है, आज तो ले ले।'

(घ) साधु के अनुसार सदाचार के तावीज़ में से भी सदाचार के स्वर निकलते हैं। जब किसी की आत्मा बेईमानी के स्वर निकालने लगती है, तब इस तावीज की शक्ति आत्मा का गला घोट देती है और आदमी को तावीज़ के ईमान के स्वर सुनाई पढ़ते हैं। वह इन स्वरों को आत्मा की पुकार समझकर सदाचार की ओर प्रेरित होता है।

(ङ) राज्य के अखबारों में खबरें छपी –'सदाचार के तावीज की खोज। तावीज बनाने का कारखाना खुला।'

(च) दरबारी ने विशेषज्ञ जाति के विशेषता बताई कि इस जाति के पास कुछ ऐसा अंजन होता है कि उसे आँखों में आँजकर वे बारीक चीज भी देख लेते हैं।

(छ) दरबारी ने बताया कि ठेका है तो ठेकेदार है और ठेकेदार हैं तो अधिकारियों के लिए घूस है।

(ज) राजा 'विशेषज्ञ' जाति के पाँच आदमी बुलवाए और कहा –"सुना है, हमारे राज्य में भ्रष्टाचार है, पर वह कहाँ है, यह पता नहीं चलता। तुम लोग उसका पता लगाओ। अगर मिल जाए, तो पकड़कर हमारे पास ले आना।

(झ) राजा ने भ्रष्टाचार को ईश्वर इसलिए कहा क्योंकि विशेषज्ञ उसे सूक्ष्म, अगोचर और सर्वव्यापी बता रहे थे। राजा का कहना था कि ये गुण तो ईश्वर के हैं। तो क्या भ्रष्टाचार ईश्वर है।

(ञ) सदाचार मनुष्य की आत्मा में होता है। यह कोई बाहरी वस्तु नहीं है। सदाचार का गुण मनुष्य में स्वतः आता है।

खेल शब्दों का

1. दिन – दिवस वार | आँख – नेत्र नयन
   ईश्वर – प्रभु भगवान | राजा – नरेश भूपति
   दिलेर – हिम्मती बहादुर | भला – नेक अच्छा

2. सफलता महानता योग्यता
   नैतिकता सरलता असफलता

3. (क) महा + आत्मा (ख) सूर्य + उदय (ग) सत् + आचार (घ) भ्रष्ट + आचार
   (ङ) अति + आवश्यक (च) उत् + ज्वल

पाठ - 10 जहाँनारा

अभ्यास

बात-बात में

(क) पाठ के अनुसार औरंगजेब ने नकीब का सिर काट दिया था।
(ख) जहाँनारा के हाथ में शाही मुहर किया हुआ कागज था।
(ग) जहाँनारा औरंगजेब की बहन और शाहजहाँ की पुत्री थी।
(घ) जहाँनारा ने अपने बीमार पिता के साथ रहना पसंद किया।
(ङ) कागज में लिखा था - इस शख्स का सब लोग हुक्म मानो और मेरी तरह इज्जत करो।

लिखित

1. (क) दिलेर खाँ (ख) दवा की (ग) यमुना के
2. (क) स्वयं औरंगजेब भी फरमान को सुनते ही झुक गया क्योंकि वह शाही मुहर किया हुआ फरमान था।
   (ख) जब जहाँनारा ने तलवार शाहजहाँ के हाथ में दी तो वे लड़खड़ा कर गिरने लगे।
   (ग) जहाँनारा ने शाहजहाँ के साथ रहना इसलिए पसंद किया क्योंकि वे बीमार थे और वह उनकी सेवा करना चाहती थी।
   (घ) जहाँनारा के पास स्वतंत्रता के लिए अवकाश नहीं था क्योंकि उसका सारा समय पिता की सेवा और दुखियों के प्रति सहानुभूति में व्यतीत हो जाता था।
   (ङ) औरंगजेब ने शाहजहाँ को बताया कि वह उनकी नासाज़ तबियत के बारे में सुनकर मिलने आया है।
   (च) शाहजहाँ की मृत्यु के बाद जहाँनारा बहुत क्षीण हो गई। उसने बीमार होने पर कभी दवा नहीं पी। धीरे-धीरे उसकी बीमारी बढ़ती गई और एक दिन यह संसार छोड़ कर चली गई।
   (छ) जहाँनारा करुणामयी मूर्ति थी। उसने अपने त्याग और बलिदान से शाहज. हाँ के जीवन के अंतिम दिनों को सँवारा। उनकी भरपूर सेवा की। वह दीन-दुखियों के प्रति भी बहुत सहानुभूति रखती थी।
   (ज) जहाँनारा को औरंगजेब से बचाने के लिए शाहजहाँ ने शाही मुहर लगा एक कागज़ दिया जिस पर लिखा था, "इस शख्स का सब लोग हुक्म माने और मेरी तरह इज़्ज़त करो।"
   (झ) दीन-दुखियों के प्रति उसकी अपार सहानुभूति देखकर ही लोग जहाँनारा को 'करुणामयी मूर्ति' बुलाने लगे।
   (ञ) अब जहाँनारा साधारण दासी के वेश में पिता की सेवा करती थी। सादे कपड़े पहनती थी। उसने अपना सारा सामान गरीबों में बाँट दिया था। वह अन्य दासियों संग मधुर व्यवहार करती थी। अब वह एक तपस्विनी ऋषिकन्या-सी हो गई थी।

खेल शब्दों का

1. अकस्मात अकर्मण्य वृद्ध कोशिश दृष्टि
   ऋषिकन्या साम्राज्य सल्तनत अश्रु
2. खून-खराबा दंगा रक्षा, सुरक्षित
   शव स्वास्थ्य शब्द
   राजसी अपमान व्यक्ति
3. (क) वात्सल्य (ख) बिगड़ (ग) शांति (घ) प्रयास
   (ङ) दासी (च) लफ़्ज

पाठ - 11 तीर्थयात्री

अभ्यास

बात-बात में

(क) हेमराज का बुखार इक्कीसवें दिन उतरा।

(ख) लाजवंती के पूछने पर हेमराज ने घबराकर बताया कि माँ मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा है।

(ग) दुर्गादास एक अच्छे और अनुभवी वैद्य थे।

(घ) गाँव की स्त्रियाँ लाजवंती से कहती –"हमारे भी तो बच्चे हैं। तू जरा-जरा सी बात में यों पागल क्यों हो जाती है?"

(ङ) हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था।

लिखित

1. (क) लुकमान (ख) मुलतान में (ग) हेमराज
2. (क) दुर्गादास वैद्य को लोग लुकमान इसलिए समझते थे क्योंकि सैकड़ों रोगी उनके हाथों से स्वस्थ होते थे।

   (ख) तीर्थयात्रा पर जाने से पहले की रात लाजवंती के आँगन में सारा गाँव इकट्ठा हुआ। झाँझे और करतालें बज रही थीं। ढोलक की थाप गूँज रही थी। स्त्रियाँ गाती थीं। दूसरी तरफ कहीं पूरियाँ बन रही थीं तो कहीं हलुआ।

   (ग) दुर्गादास ने हेमराज के पिता को बुलवाने के लिए इसलिए कहा क्योंकि बुखार सख्त था और हानिकारक भी हो सकता था।

   (घ) लाजवंती के यहाँ कई पुत्र पैदा हुए थे मगर सबके सब बचपन में ही मर गए थे। आखिरी पुत्र हेमराज उसके जीवन का सहारा था। उसका मुँह देखकर वह पहले बच्चों का दुःख भूल जाती थी इसलिए लाजवंती को हर समय हेमराज की चिंता रहती थी।

   (ङ) दुर्गादास ने बुखार न उतरने का कारण मियादी बुखार बताया। बुखार इक्कीसवें दिन उतरा।

(च) हरो लाजवंती की पड़ोसिन थी। हरो को कुंवारी बेटी का दु:ख खा रहा था। वह रात-रातभर रोती रहती थी कि उसके ब्याह का खर्च कैसे पूरा होगा।

(छ) यदि हेमराज कभी घर के बाहर खेलने चला जाता था तो लाजवंती घबराकर वह उसे ढूँढ़ने लग जाती थी।

(ज) लाजवंती ने देवी की आरती उतारी, फूल चढ़ाए, मंदिर की परिक्रमा की और प्रेम के बोझ से काँपते हुए स्वर में मानता मानी कि देवी माता! मेरा हेम बच जाए तो मैं तीर्थयात्रा करुँगी। मानता मानने के बाद लाजवंती को ऐसा लगा जैसे संकट टल गया।

(झ) हेमराज का साधारण सिरदर्द सुनकर भी लाजवंती का मन काँप उठा। बात साधारण थी मगर लाजवंती का ह्रदय काँप गया क्योंकि यही दिन थे, यही ऋतु थी जब उसका पहला पुत्र मदन मरा था। वह इसी तरह बीमार हुआ था। लाजवंती को पैरों के नीचे से जमीन खिसकती हुई मालूम होने लगी और वह व्याकुल हो उठी।

(ञ) लाजवंती ने तीर्थयात्रा पर जाने की सारी तैयारी कर ली थी किंतु हरो की कुँवारी बेटी के विवाह की चिंता सुनकर उसने तीर्थयात्रा के लिए रखे रुपये हरो को दे दिए। इसलिए वह तीर्थयात्रा पर नहीं जा पाई।

(ट) जैसे सावित्री ने अपने मरे हुए पति को जिलाया था वैसे ही लाजवंती ने अपने पुत्र को मौत के मुँह से बाहर निकाला था इसलिए वैद्य जी ने लाजवंती को सावित्री की उपाधि दी।

खेल शब्दों का

1. (क) पैरों के नीचे से जमीन खिसकना - हेमराज का सिरदर्द सुनते ही लाजवंती के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गयी।

   (ख) जीवन का सहारा - हेमराज लाजवंती के जीवन का सहारा है।

   (ग) खून-खौलना - मोहन का गलत व्यवहार देखकर शोभा का खून खौल गया।

   (घ) कानों-कान खबर न होना - समीर के पास होने की किसी को कानों-कान तक खबर न हुई।

2. (क) (क) संदिग्ध भूतकाल (ख) हेतुहेतुमद भूतकाल (ग) पूर्ण भूतकाल।

3.

	विशेषण	विशेष्य
(क) मियादी बुखार	बुखार	मियादी
(ख) सुहानी ऋतु	ऋतु	सुहानी
(ग) तेज़ हवा	हवा	तेज़
(घ) साधारण दवा	दवा	साधारण
(ङ) अनुभवी वैद्य	वैद्य	अनुभवी

पाठ - 12 अमृत-मोती

अभ्यास

बात-बात में

(क) विद्यारूपी धन परिश्रम के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता।
(ख) मनुष्य को मीठी वाणी बोलनी चाहिए।
(ग) जो गरीब के हित के लिए कार्य करे वे लोग बड़े होते हैं।
(घ) साधु को सूप के समान होना चाहिए।
(ङ) कबीर ने सत्य को तपस्या के बराबर बताया गया है।

लिखित

1. (क) साधु की (ख) गरीबों पर (ग) पाप
2. (क) जो मीठी वाणी बोलते हैं गुरु उसके हृदय में बसते हैं क्योंकि मीठे बोल सबको भाते हैं।
   (ख) कविवर वृंद के अनुसार मेहनत करके धन प्राप्त करना श्रेष्ठ है।
   (ग) कबीर ने सज्जन व्यक्ति की तुलना साधु से की है।
   (घ) सज्जन व्यक्ति की संगत अच्छी होती है।
   (ङ) मधुर वाणी क्रोध को खत्म कर देती है।
   (च) सरस्वती के भंडार की विशेषता है कि उसे जितना ज्ञान खर्च करोगे उतना ही बढ़ेगा और बिना खर्च किए घट जाएगा।
   (छ) हमें मीठी बोली बोलनी चाहिए जिससे अपना और दूसरों का भी क्रोध खत्म हो जाए।
   (ज) सज्जन लोग दूसरों की पीड़ा हर लेते हैं। उनकी संगति से व्यक्ति में ऐसा सद्गुण आ जाता है। जबकि दुष्ट व्यक्तियों की संगति से व्यक्ति को केवल बदनामी और उलाहनें ही सुनने को मिलते हैं।
   (झ) जो व्यक्ति भीख माँगते हैं रहीम ने उन्हें मृतक समान कहा है।
   (ञ) (अ) रहीम जी कहते हैं, जो गरीबों की मदद करते हैं, वे महान होते हैं। बेचारा सुदामा श्री कृष्ण की मित्रता के लायक कहाँ था। फिर भी उन्होंने सुदामा से बचपन की मित्रता पूरी तरह निभाई। उसकी मदद की। यह श्रीकृष्ण का बड़प्पन था।
   (ब) रहीम जी कहते हैं कि जिनमें बड़प्पन होता है, वे अपनी बड़ाई कभी नहीं करते। जैसे हीरा कितना भी अमूल्य क्यों न हो, कभी अपने मुँह से अपनी बड़ाई नहीं करता।

खेल शब्दों का

1.

मित्रता - शत्रुता	सत्य - असत्य	दुष्ट - नेक
गरीब - अमीर	ठंडा - गर्म	बुरी - अच्छी
बड़ी - छोटी	पाप - पुण्य	नर - मादा

2. (क) यह पुस्तक ही ज्ञान का भंडार है।
   (ख) वो ही सच्चा मित्र है जो मुश्किल में साथ दें।

(ग) यह काम मैं ही करूँगा।
(घ) वह ही सफल होगा जो मेहनत करेगा।
(ङ) यह गाँव ही मेरा जन्म स्थान है।

3. (क) माँ आशा से पत्र लिखवाती है।
(ख) अध्यापक मोहन से कहानी पढ़वाते हैं।
(ग) संगीत शिक्षिका संजना से गीत गँवा रही हैं
(घ) मालिक माली से पौधे लगवा रहे हैं।

पाठ - 13 ऋण-जंजाल

अभ्यास

बात-बात में

(क) मनुष्य तर्कशील प्राणी है।
(ख) कार जिनके लिए केवल दर्शनलाभ की वस्तु थी उनके द्वार पर वह साक्षात् खड़ी है।
(ग) आज की सुलभ, आसान व सर्वसुविधा संपन्न ऋण व्यवस्था ने सभी के सपनों को मूर्त रूप प्रदान किया है।
(घ) प्रस्तुत पाठ में लेखक ने ऋण व्यवस्था को गंगा की संज्ञा दी है।
(ङ) कल जिनके लिए साइकिल भी एक सपना थी आज वे मोटर साइकिल पर इतराते घूमते हैं।

लिखित

1. (क) तर्कशील (ख) डायनासोर की (ग) ऋण व्यवस्था
2. (क) पाठ के अंत में लेखक लोगों को संदेश देता है कि जीवन में अपनी स्थिति के अनुरूप रंग भरें, जिसकी आभा आपको सदा महसूस हो। उन कृत्रिम रंगों के भुलावे में न आएँ जो जीवन को बेरंग या बदरंग बनाते हैं।
(ख) वित्तीय कंपनियों द्वारा प्रसाद की तरह बाँटने वाले ऋण को न लेना, वित्तीय कंपनियों की तौहीन है।
(ग) चार्वाक दर्शन का सूत्र है, "जब तक जियो, सुखपूर्वक जियो, कर्ज़ करके घी पियो, इस नश्वर शरीर का क्या पता पुनर्जन्म में मिले या न मिले।"
(घ) धन का अभाव घर में अशांति पैदा करता है।
(ङ) ऋण के जाल में फंसने से आप मानसिक रूप से चिंतित रहते हैं। टी.वी. के चित्र बेरंगे, फ्रिज की शीतलता उष्ण व कार की गति साइकिल से भी धीमी लगने लगती है। जिंदगी बेरंग लगती है। इसलिए लेखक ने इसे जी का जंजाल कहा है।
(च) आपका उद्धार करने के लिए कष्टहरिणी, सर्वदुखनिवारिणी, पतित पावनी ऋण-गंगा बहती जा रही है।
(छ) आपको उन्हें देखकर ईर्ष्या होती है जो ऋण-गंगा में गोते लगा चुके हैं और आकंठ ऋण-सुख भोग रहे हैं।

(ज) वित्तीय कंपनियों के एजेंट घर बैठे-बैठे ही ऋण दिलवाने के ऐसे सब्ज़बाग दिखाते हैं कि तर्कशील प्राणी होने के बावजूद भी मनुष्य ऋण के जाल में फँस जाता है।

(झ) वित्तीय कंपनियाँ बिना आवेदन पर ही झूठी-सच्ची आय, पैन कार्ड आदि के आधार पर ऋण दिलाने को तत्पर रहती हैं।

(ञ) महानगरों की रेड लाइटों पर लगी कारों की कतारें देखकर नहीं माना जा सकता कि हमारे देश में गरीबी है।

खेल शब्दों का

1. आज - कल निरर्थक - सार्थक सुख - दुःख
   गुण - दोष पतझड़ - बसंत पूर्ण - अधूरा
2. (क) वर्तमान काल (ख) भूतकाल (ग) भूतकाल
   (घ) भविष्यकाल (ङ) वर्तमान काल
3. कहते हैं धन का अभाव घर में अशांति पैदा करता है, इसी अशांति को दूर करने के लिए वित्तीय कंपनियाँ आज आपके दरवाज़े पर लाइन लगाकर खड़ी हैं। आपको मात्र अपना सिर हिलाना है और आपको आपके घर पर ही ऋण की सारी सुविधाएँ उपलब्ध हो जाएँगी। आप डाउन पेमेंट की व्यवस्था कीजिए तो विभिन्न तरह के ऋण; व्यक्तिगत ऋण; गृह ऋण; कार ऋण; कृषि ऋण आदि, आपकी सेवा में उपलब्ध होंगे। तर्कशील एवं विचारवान होते हुए भी क्या आप इस तरह घर आती हुई लक्ष्मी का निरादर कर पाएँगे?

पाठ - 14 सती सावित्री

अभ्यास

बात-बात में

(क) मद्र देश की राजकुमारी का नाम सावित्री था।

(ख) अश्वपति मद्र नामक प्रदेश का राजा थे।

(ग) सावित्री का विवाह सत्यवान के साथ हुआ।

(घ) यमराज बिना सोचे समझे सावित्री को वरदान देकर फंस गए थे यदि वे सत्यवान के प्राण लौटाते तो प्रकृति के नियम का उल्लंघन होता और यदि प्राण नहीं लौटाते तो उनका वचन झूठा पड़ जाता इसलिए वह सत्यवान के प्राण नहीं ले जा सके।

(ङ) नारद जी ने सत्यवान की आयु केवल एक वर्ष शेष बताई थी।

लिखित

1. (क) सुंदर (ख) आश्रम में (ग) अश्वपति
2. (क) सावित्री का मंतव्य समझकर यमराज ने उससे कहा कि सत्यवान की आयु पूरी हो गई है इसलिए मैं इसके प्राण लेकर जा रहा हूँ। यह प्रकृति का नियम है, मैं इसे नहीं बदल सकता।

(ख) सावित्री को सत्यवान अपने जीवन साथी के रूप में भा गया था। यह देखकर मंत्री और सावित्री की सखियों के हर्ष की सीमा न रही।

(ग) सावित्री यमराज के आगे उन्हीं के द्वारा दिए गए वरदान को रखकर सत्यवान के प्राण यमराज से वापस ले आई।

(घ) सावित्री की आयु दिन-प्रतिदिन बढती जा रही थी इसलिए राजा और रानी के रातों की नींद उड़ गई थी।

(ङ) जंगल में स्थित एक आश्रम में सावित्री की सत्यवान से मुलाकात हुई।

(च) प्रधानमंत्री ने परामर्श दिया कि सावित्री को अपना वर स्वयं चुनने की स्वतंत्रता दी जाए।

(छ) राजा ने सावित्री से कहा कि सत्यवान से विवाह का विचार छोड़ दे क्योंकि सत्यवान अल्पायु है और उसकी आयु का केवल एक वर्ष शेष रह गया है।

(ज) सत्यवान की अल्पायु होने की बात जानकर भी सावित्री ने बड़ी शांति से कहा कि मैं अपने निश्चय पर अडिग हूँ। मैंने सत्यवान को मन से अपना पति स्वीकार कर लिया है। भारतीय नारी अपने जीवन में एक ही पुरुष को पति मानती है। मृत्यु के भय से मैं भारतीय नारी के आदर्शों से नहीं गिरूँगी।

(झ) यमराज बिना सोचे-समझे वरदान देकर फंस गए थे। यदि वे सत्यवान के प्राण लौटाते तो प्रकृति के नियम का उल्लंघन होता और यदि प्राण नहीं लौटाते तो उनका वचन झूठा पड़ जाता वे बोले- सावित्री तुम बहुत बुद्धिमती हो। तुमने आज सिद्ध कर दिया कि सती अपने तप से सभी कुछ प्राप्त कर सकती है।

(ञ) सावित्री ने अपने ससुराल में राजसी वेशभूषा त्यागकर तपस्विनी का वेष धारण कर लिया था और वह अपने सास-ससुर व पति की सेवा करती थी।

खेल शब्दों का

1.

मंतरी - मंत्री	दवानल- दावानल	तलास - तलाश
पुरुश - पुरुष	परान - प्राण	परस्ताव - प्रस्ताव
तपसया - तपस्या	देसाटन- देशाटन	परजा - प्रजा

2. (क) अधिक - अ+ध्+इ+क्+अ   (ख) ज्ञान - ज्+ञ्+आ+न्+अ
   (ग) तप - त्+अ+प्+अ   (घ) हार - ह्+आ्+र्+अ
   (ङ) वेश - व्+ए+श्+अ

3. (क) नियम - विद्यालय में बच्चों को नियम का पालन करना चाहिए।
   (ख) देशाटन - देशाटन के दौरान नियमों का पालन करना नागरिकों का कर्तव्य है।
   (ग) अल्पायु - सत्यवान अल्पायु था।
   (घ) प्राचीन - प्रचीन काल में बच्चे गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते थे।
   (ङ) स्वयं - अपना काम स्वयं करना चाहिए।
   (च) परामर्श - उसके परामर्श ने मुझे सही मार्ग दिखाया।
   (छ) आश्रम - सावित्री ने सत्यवान को जंगल के एक आश्रम में देखा।

पाठ - 15 मेरे साथी

अभ्यास

बात-बात में

(क) देहरादून जेल में नेहरु जी को एकाकीपन की शिकायत थी।

(ख) यह नेहरु जी की आत्मकथा का अंश है।

(ग) बरेली जेल में बंदरों की खासी आबादी थी।

(घ) लंबी सजा पाने वाले कैदी कभी-कभी जानवरों को पाल-पोसकर अपनी भावना तृप्त किया करते थे।

(ङ) लेखक को चमगादड़ बड़े मनहूस जीव लगते थे और उनसे बड़ी नफ़रत थी और कुछ भय-सा मालूम होता था। वे उसके चेहरे के एक इंच दूर से उड़ जाते और हमेशा उसे डर लगता था कि कहीं उसपर झपट्टा न मार दें।

लिखित

1. (क) ततैया ने (ख) फाउंटेन पेन को (ग) देहरादून
2. (क) लेखक ने फाउंटेन पेन के फिलर में जरा-सी रुई लगा दी। जिससे यह उनके लिए बढ़िया 'फीडिंग बोतल' हो गई।

   (ख) लेखक ने एक काले और जहरीले बिच्छू को बोतल में बंद करके रख छोड़ा था। फिर उसने उसे रस्सी में बांधकर दीवार पर लटका दिया, लेकिन वह किसी तरह भाग निकला।

   (ग) गिलहरी लेखक के पैर पर चढ़कर घुटनों पर बैठ जाती और चारों तरफ देखा करतीं। वह फिर लेखक की आँखों की ओर देखती और तब समझती कि मैं पेड़ या जो कुछ उसने समझा हो वह नहीं हूँ। एक क्षण वह सहम जाती और फिर दुबककर खिसक जाती।

   (घ) देहरादून की जेल में लेखक के साथ जीव-जंतु तथा अनेक प्रकार के रेंगने वाले और उड़ने वाले जीवधारी रहते थे।

   (ङ) अपने बच्चों को भीड़ के बीच बंधा देख एक बड़ा बंदर उस भीड़ में कूदा और बेधड़क अपने बच्चे को छुड़ा ले गया। यह बहादुरी का काम था।

   (च) जब ततैया ने लेखक को अनजाने में काट खाया था। तो लेखक ने क्रुद्ध होकर उन सबको निकालने की कोशिश भी की लेकिन कुछ रोज पहले बने अपने बने घरों को बचाने के लिए उन्होंने खूब डटकर सामना किया। आखिर लेखक ने अपना इरादा छोड़ दिया और तय किया कि अगर वह उसे न छेड़ें तो वह भी उन्हें आराम से रहने देगा। उन्होंने उसपर फिर कभी हमला नहीं किया।

   (छ) कलकत्ते की अलीपुर जेल में कोई आधी रात को लेखक सहसा जाग उठा। ऐसा लगा जैसे कोई चीज उसके पाँव पर रेंग रही है। उसने टॉर्च जलाई तो क्या देखा कि एक कानखजूरा बिस्तर पर है। एकाएक बिना आगे-पीछे सोचे

उसने बिस्तर से ऐसी जोर की छलांग मारी कि दीवार से टकराते-टकराते बचा।

(ज) लेखक साढ़े चौदह महीने तक लेखक देहरादून जेल की अपनी छोटी-सी कोठरी में रहा था इसलिए लेखक को लगा कि वह देहरादून की जेल का एक हिस्सा है।

(झ) जब गिलहरी के बच्चे पेड़ से नीचे गिर जाते तो उनकी माँ उनके पीछे-पीछे आती, लपेटकर उनका एक गोला बनाती और उनको ले जाकर सुरक्षित जगह में रख देती।

(ञ) छिपकलियाँ अपना शिकार चुपके से पकड़ लेती थी और हास्यास्पद ढंग से हिलाती हुई एक-दूसरे को लपेट लेती थी। साधारणतया वे ततैया को नहीं पकड़ती थी, लेकिन दो बार लेखक ने देखा कि उन्होंने निहायत होशियारी और सावधानी से उसको मुँह की तरफ से चुपके से झपटकर पकड़ा था।

खेल शब्दों का

1. (क) की (ख) के (ग) की (घ) का (ङ) की
2. **द्वंद्व समास** - 1. पिता-पुत्र 2. माता-पिता 3. सुख-दुख 4. पाप-पुण्य 5. लाभ-हानि

   तत्पुरुष समास 1. गंगातट 2. जलधारा 3. गणतंत्र 4. गंगाजल 5. जीवनदर्शन
3. (क) मैना ने कोठरी के ऊपर अपना घोंसला बनाया था।

   (ख) मुझे इस बात की खुशी हुई कि मेरी तीमारदारी काम आ गई।

   (ग) आँगन में हर तरह के जीव-जंतु रहते थे।

   (घ) नेहरू जी अपने जीवन के कई साल जेल में बिताया।

   (ङ) उनके वे इशारे और उनकी अधीर पुकार देखते और सुनते ही बनती थीं।

पाठ - 16 न्यूयॉर्क की झलक

अभ्यास

बात-बात में

1. (क) मैनहेट्टन में सोने-चाँदी की मंडी है।

   (ख) मैनहेट्टन व लिबर्टी टापू हडसन नदी के दोनों किनारों पर स्थित हैं।

   (ग) 'स्टेच्यु ऑफ लिबर्टी' 'लिबर्टी' टापू पर स्थित है। यह कांस्य धातु की बनी हैं।

   (घ) पत्र में आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन की चर्चा की गयी है।

   (ङ) यह पाठ पत्र शैली में लिखा गया है।

लिखित

1. (क) न्यूयॉर्क (ख) हडसन (ग) रंजना को
2. (क) अमेरिका विश्व का सबसे बड़ी शक्तिशाली एवं समुन्नत राष्ट्र है। संपूर्ण

संयुक्त राज्य अमेरिका में सभी की एक ही संस्कृति है, जिसे वे गौरवशाली संस्कृति कहते हैं।

(ख) सकुशल पहुँचते ही लेखिका के दिमाग में आया कि वह सबसे पहले रंजना को पत्र लिखे और न्यूयॉर्क शहर के वैभव का सजीव चित्रण करे।

(ग) अब्राहम लिंकन दयालु, परिश्रमी, परसेवी बालक थे जो 45 वर्ष की आयु में अमेरिका के राष्ट्रपति बने थे।

(घ) मैनहेट्टन न्यूयॉर्क का एक व्यापारिक केंद्र है। यह एक द्वीप जैसा है। यह हडसन नदी के एक किनारे पर स्थित है। इसे सोने-चाँदी की मंडी कहा जाता है।

(ङ) अमेरिका के जीवन की सबसे अच्छी बात यह है कि सभी निवासी चाहे वे कहीं से भी आकर वहाँ बस गए हों, आपने आप को अमेरिका का निवासी कहलाने में गर्व महसूस करते हैं।

(च) आठवें विश्व सम्मेलन में भाग लेने के लिए पूरे विश्व से विद्वान आए थे। उस सम्मेलन के आयोजक तथा आयोजन सभी ने लेखिका के मन को बहुत प्रभावित किया।

(छ) प्रबंध की दृष्टि से न्यूयॉर्क को पाँच भागों में बाँटा हुआ है— मैनहेट्टन, ब्रुक्रलिन, ब्रोक्स, क्वींस, एंव स्टेटन आईलैंड।

(ज) रंजना की माँ आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने न्यूयॉर्क गई थीं।

(झ) यद्यपि वाशिंगटन डी.सी. संयुक्त राज्य अमेरिका की राजधानी है, किंतु व्यापारिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र न्यूयॉर्क ही है।

(ञ) रंजना की माँ आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने न्यूयॉर्क गई थीं।

खेल शब्दों का

1. उल्लेख - उत्+लेख   संयोग - सम्+योग   मनोरंजन - मनः+रंजन
   प्रत्येक - प्रति+एक   महोत्सव - महा+उत्सव   सम्मेलन - सम्+मेलन
2. विशेषण - प्रसिद्ध   मनोहारी   बड़ी   ऊँचे   शक्तिशाली
   विशेष्य - ज़्यादा   खूबसूरत   इतनी   बहुत   सबसे
3. (क) शक्तिशाली - वह राज्य का शक्तिशाली योद्धा है।
   (ख) वैभवपूर्ण - राजा का वैभवपूर्ण दरबार सभी को चकाचौंध कर रहा था।
   (ग) स्वतंत्रता - स्वतंत्रता हर मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है।
   (घ) शोभायमान - चाँदनी रात में धरती शोभायमान हो रही थी।
   (ङ) समृद्ध - भारत एक समृद्ध देश है, जिसमें विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं का संगम है।
   (च) विशालकाय - विशालकाय पहाड़ों को देखकर मन मोहित हो जाता है।

पाठ - 17 क्या निराश हुआ जाए?

अभ्यास

बात-बात में

(क) ईमानदारी को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है।
(ख) आजकल प्रत्येक व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है।
(ग) भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को अधिक महत्व नहीं दिया गया।
(घ) आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया।
(ङ) नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं।

लिखित

1. (क) ईमानदारी को (ख) कानून को (ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. (क) बस के खराब होने पर यात्रियों को संदेह हुआ कि हमे धोखा दिया जा रहा है।
(ख) लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते है।
(ग) समाचार-पत्रों में भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज में उन तत्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।
(घ) कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी, हे प्रभु! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।
(ङ) ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करने वाले फल-फूल रहे हैं।
(च) मनुष्य बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है। उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं।
(छ) समाचार-पत्रों में भ्रष्टाचार को उजागर करते वाले समाचार भरे रहते हैं।
(ज) एक बहुत बड़े आदमी ने लेखक से कहा कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता है। जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएंगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ा कर दिखाया जाएगा।
(झ) वर्तमान में ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलाने वाले निरीह और भोले-भाले श्रमजीवी पिस रहे हैं।
(ञ) भारतवर्ष में आज भी समाज मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरों को पीड़ा पहुँचाना पाप समझता है। इसलिए ऐसा समझा जा सकता है कि भारतवर्ष में धर्म अब भी कानून से बड़ी चीज़ है।

खेल शब्दों का

1. (क) उथल-पुथल - आज का जीवन आरोप-प्रत्यारोप से भरा है।
   (ख) उदास - हे मन! तूझे निराश होने की जरुरत नहीं है।
   (ग) शक - आजकल प्रत्येक व्यक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है।
   (घ) व्यापार - फ़रेब का रोज़गार करने वाले फल-फूल रहे हैं।
   (ङ) दोष - अपने अवगुणों को छिपाकर दूसरों पर आरोप लगाना आसान है।
2. अवस्था - जीर्णावस्था अवस्था - दीनावस्था अवस्था - वृद्धावस्था
   अवस्था - वाल्यावस्था अवस्था - रुग्णावस्था
3. (क) धर्म (ख) कविता (ग) अनुराग (घ) सम्मान

पाठ - 18 देशप्रेम के दाम

अभ्यास

बात-बात में

(क) सनातन की पत्नी का नाम मधुमिता था।
(ख) नारायण दास ने सनातन को वकालत की पढ़ाई करवाई।
(ग) गोकुल भोला आमरण अनशन कर जेल में शहीद हुआ।
(घ) पकड़े जाने पर नारायण दास को कुल सात साल की जेल हुई।
(ङ) अंग्रेज सरकार ने उनपर एक हजार रुपए के इनाम की घोषणा की।

लिखित

1. (क) सौदामिनी (ख) महात्मा गाँधी (ग) ब्रिटिश
2. (क) आज़ादी के बाद अनेक लोग देश की सत्ता हथियाने के लिए चुनावी लड़ाई में उतर गए थे। जिन्होंने आज़ादी के लिए थोड़ा भी त्याग किया था, उसके बल पर बाद में बहुत कुछ बटोरा। मकान, खेत-खलिहान, कोटा-परमिट से लेकर पद-पदवी तक अनेक चीज़ों के लिए हाथ-पैर मारे। इन सब से देश का पतन हुआ।
   (ख) नारायण दास के बेटे सनातन ने उनसे श्रम मंत्री से अपनी यूनियन की माँग को मानने की सिफ़ारिश करने को कहा।
   (ग) नारायण दास को शहीदों से ईर्ष्या इसलिए हो रही थी क्योंकि वे देश का अधोपतन देखने से पहले ही चल बसे थे। उन्हें नारायण दास की तरह संताप का दुर्भाग्य कभी नहीं देखना पड़ा।
   (घ) महात्मा गाँधी का नारायण बाबू पर गहरा प्रभाव था क्योंकि गाँधी की तरह उन्होंने भी आज़ादी के बाद कोई पद-पदवी नहीं ली थी। चुनाव नहीं लड़े थे। कोई लाभ नहीं उठाया था। वह किसी प्रकार की सिफ़ारिश लगाने के भी पक्षधर नहीं थे।

(ङ) एक दिन जब घर मिलने पहुँचे नारायण दास ने अपने बेटे सनातन को बीमार देखा तो वे क्रांतिकारियों को मिले निर्देश भूल गए कि उन्हें तुरंत वहाँ से निकलना है। वे रातभर सनातन को गोद में लिए बैठे रहे। अगली सुबह पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया।

(च) जब नारायण दास ने अपने बेटे सनातन और बहु मधुमिता द्वारा कही सिफ़ारिशें लगाने से मना कर दिया तो वे उनसे रूष्ट हो गए।

(छ) मधुमिता को कोरापुट में अखबार पढ़कर पता चला कि ससुर बीमार हैं।

(ज) पिछले दो-तीन महीनों में नारायण बाबू आधी रात में घंटे-दो घंटे के लिए एक-दो बार ही घर आए थे। स्त्री और बेटे को देखकर दो बोल हिम्मत और सांत्वना देकर चले जाते थे। उस आधी रात को भी केवल घंटे भर के लिए घर आए थे, पर घर पहुँचने पर देखा कि सनातन बुखार में बेहाल पड़ा है। ऐसे में अकेली सौदामिनी के पास बीमार बच्चे को छोड़कर देशप्रेम की जलती आग में कूदने की हिम्मत नहीं हो रही थी इसलिए वह बच्चे को छोड़कर न जा सके।

(झ) सनातन और मधुमिता अपेक्षा रखते थे कि जिस प्रकार से आज़ादी के लिए थोड़ा-सा भी त्याग करने वालों ने मकान, खेत-खलिहान, कोटा-परमिट से लेकर पद-पदवी तक हासिल किए थे उसी प्रकार नारायण दास भी देश के प्रति की गई अपनी सेवा का प्रतिफल लें और लाभ उठाएँ।

(ञ) ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जनचेतना जगाने के इरादे से नारायण दास भूमिगत हुए थे।

खेल शब्दों का

1. घृणा - नफ़रत, तिरस्कार शिक्षक - गुरु, अध्यापक उन्नति - प्रगति, तरक्की
   आस्था - विश्वास, भरोसा देश - राष्ट्र, मातृभूमि स्वतंत्रता - आज़ादी, मुक्ति
   पत्नी - भार्या, जीवनसंगिनी रात - निशा, रात्रि सुंदर - मनोहर, आकर्षक

2. (क) आदर्श - जीवन में एक आदर्श व्यक्ति का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो हमें प्रेरणा दे और सही राह दिखाए।

   (ख) स्नेह - माता-पिता का स्नेह अपने बच्चों के लिए सबसे बड़ा आशीर्वाद होता है।

   (ग) तकलीफ़ - किसी की तकलीफ़ को समझने के लिए हमें खुद को उसकी जगह पर रखना होगा।

   (घ) आस्था - ईश्वर में आस्था ही हमें जीवन में कठिन परिस्थितियों में उबरने की शक्ति देती है।

   (ङ) हथियाना - दूसरों की संपत्ति हथियाना गलत है, हमें हमेशा अपनी मेहनत से आगे बढ़ना चाहिए।

   (च) सांत्वना - दुखी व्यक्ति को सांत्वना देना और उसके साथ खड़े रहना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है।

(च) विस्मय - प्रकृति के अद्भुत नज़ारों को देखकर मन विस्मय से भर जाता है।

3. (ख) सौंदर्यपरक सुंदरता असुंदर
(ग) समर्थक सामर्थ्य असमर्थ
(घ) जैविक जीवंत निर्जीव
(ङ) शैक्षिक शैक्षणिकता अशिक्षा

पाठ - 19 महायज्ञ

अभ्यास

बात-बात में

(क) उन दिनों एक ऐसी प्रथा प्रचलित थी जिसमें यज्ञ के फल का क्रय-विक्रय हुआ करता था। छोटा-बड़ा यज्ञ जैसा होता था उसका तदनुसार मूल्य मिल जाता था।
(ख) सेठ जी बहुत दयालु, विनम्र व धर्मपरायण थे।
(ग) सेठ जी ने धन्ना सेठ को यज्ञ बेचने का निर्णय किया।
(घ) सेठ जी ने चौके को ठीक तरह जमाने के लिए उसमें लगे कुंदे को उठाया तो नीचे तहखाने की सीढ़ियाँ दिखाई दी।
(ङ) सेठ जी अपनी तंगी का विचार कर एक यज्ञ बेचने के लिए तैयार हो गए।

लिखित

1. (क) कुंदनपुर (ख) कुत्ते को (ग) यज्ञ
2. (क) सेठ-सेठानी कुंदे से चौका उठाकर तहखाने में उतरे तो वहाँ के प्रकाश से उनकी आँखें चौंधियाने लगीं। तहखाने में छोटी-छोटी हौज़ें बनी थीं जिसमें सोने-चाँदी के सिक्के भरे थे। यह देख दोनों के पाँव वही जम गए, उनके मुँह से बोल तक ना निकला।
(ख) सेठ जी ने एक-एक करके अपनी चारों रोटियाँ भूखे कुत्ते को खिला दी और स्वयं एक लोटा पानी पीकर अपने रास्ते चल दिए।
(ग) सेठ जी ने भूखे कुत्ते को रोटी खिलाकर एक महायज्ञ रूपी कार्य किया था, किंतु उन्होंने महायज्ञ धन्ना सेठ को नहीं बेचा क्योंकि उन्हें मानवोचित कार्य का मूल्य लेना उचित नहीं लगा।
(घ) सेठानी जैसे-तैसे पड़ोसी से थोडा-सा आटा माँग लायी और रास्ते के लिए चार मोटी-मोटी रोटियाँ बना पोटली में बाँधकर सेठ जी को दे दीं। सेठ जी बड़े तड़के उठे और कुंदनपुर की ओर चल दिए।
(ङ) ऐसी अफ़वाह थी कि धन्ना सेठ की सेठानी को कोई दैवी शक्ति प्राप्त है, जिससे वह तीनों लोकों की बात जान लेती है।
(च) सेठ जी ने मन-ही-मन भगवान को धन्यवाद दिया और प्रार्थना की कि हे भगवान! मेरी कर्तव्य बुद्धि को जगाए रखना। स्वयं कष्ट सहकर दूसरों के कष्ट कम कर सकूँ, ऐसी बुद्धि ही जगाए रखना।

(छ) सेठानी महायज्ञ खरीदना चाहती थी। उनका मानना था कि नि:स्वार्थ भाव से किया गया कर्म ही सच्चा यज्ञ अर्थात् महायज्ञ है। सेठ जी द्वारा भूखे कुत्ते को रोटियाँ खिलाकर स्वयं भूखा रह जाना उनकी दृष्टि में महायज्ञ था।

(ज) आधा रास्ता पार करते-करते तेज धूप में चलने में सेठ जी को कष्ट होने लगा था। पसीने से उनकी सारी देह लथपथ थी और भूख भी लगी थी। पेड़ के नीचे रोटी खाने बैठे। किंतु निकट ही एक भूखे कुत्ते को देख उनका हृदय दया से भर आया और उन्होंने एक-एक कर सारी रोटियाँ कुत्ते के सामने डाल दी और स्वयं पानी पीकर चल दिए।

(झ) जब धन्ना सेठ की सेठानी ने सेठ से महायज्ञ बेचने की बात की तो उन्हें यह मज़ाक लगी क्योंकि उन्होंने तो बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया था।

(ञ) सेठ को खाली हाथ वापिस आता देख सेठानी इस आशंका से काँप उठी कि अब उनका जीवन कैसे चलेगा। किंतु सारी कथा सुनने के बाद वह यह देख उल्लासित हुई कि उनके पति ने विपत्ति में भी धर्म का साथ नहीं छोड़ा और फिर सब कुछ भगवान की इच्छा पर छोड़ दिया।

खेल शब्दों का

1. (क) शरणागत (ख) कटुभाषी (ग) दयालु (घ) कृतज्ञ (ङ) मधुरभाषी
2. (क) खरी-खोटी सुनाना - काम न करने पर पिता जी ने बेटे को खरी-खोटी सुनाई।
   (ख) पेट में चूहे कूदना - परीक्षा के बाद छात्र के पेट में चूहे कूद रहे थे।
   (ग) आँखें चौंधियाना - हीरे की चमक देखकर सब की आँखें चौंधिया गईं।
   (घ) मुँह फेर लेना - सोहन हर किसी की बात को अनसुना कर देता है और मुँह फेर लेता है।
   (घ) हालत पतली होना - कठिन प्रश्न-पत्र देखते ही छात्र की हालत पतली हो गयी।
3. (क) सेठ जी सारा दिन चलते रहे।
   (ख) सेठ जी के पास केवल चार रोटियाँ थीं।
   (ग) क्या आपने यज्ञ बेच दिया है?
   (घ) सेठ जी ने काले कुत्ते को रोटी खिलाई।
   (ङ) सेठ जी की हालत बहुत पतली हो गयी थी।

पाठ - 20 पुस्तक कीट

अभ्यास

बात-बात में

(क) निर्मला आठवीं कक्षा में पढ़ती थी।

(ख) निर्मला को 'तोती' और 'भीमसेनी' उपनाम दिए गए थे।

(ग) कुमारी सुलेखा सभी छात्राओं के साथ पढ़ती थी। वह मुख्याध्यापिका से निर्मला के बारे में कुछ बताने के लिए निवेदन करती है।

(घ) मुख्याध्यापिका ने अंत में अपना फैसला सुनाया कि मैं निर्मला को दोषी ठहराती हूँ कि वह तीन महीनों तक किताबों की सूरत न देखे। अपनी सब किताबें मेरे पास जमा करा दे।

लिखित

1. (क) कुसुम (ख) मोरनी (ग) निर्मला (घ) इंग्लैंड में (ङ) कटक
2. (क) पुस्तक कीट से तत्पार्य है वह व्यक्ति जो सारा समय पढ़ता ही रहता हो। निर्मला को पुस्तक कीट कहकर इसलिए बुलाया जाता था क्योंकि वह सारा दिन पढ़ती रहती थी।

   (ख) नाटक में निर्मला को 'भीमसेनी' और 'तोती' कहकर इसलिए बुलाया जाता था क्योंकि भीमसेन बहुत बलवान थे और निर्मला दुबली-पतली।

   (ग) निर्मला केवल रटकर पढ़ती रहती थी, न खेलती थी, न घूमती-फिरती थी। रटने के कारण उसका सारा विषय ज्ञान आपस में मिल गया था। वह मानसिक तौर पर स्वस्थ नहीं थी।

   (घ) मुख्याध्यापिका ने अंत में निर्मला से प्रश्न पूछा कि आदिवासी कौन है? निर्मला ने उत्तर दिया कि भारत के आदिवासी आर्य है। इनका रंग काला होता है, नाक चपटी और कद ठिगना। इनकी आँखें चमकती हैं।

   (ङ) निर्मला किताबी-कीड़ा थी। वह सारा समय बस पढ़ती ही रहती थी। न खेलना, न घूमना, न पिकनिक पर जाना। इससे उसके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ा और वह दुर्बल हो गई। वह समझती थी कि सब छात्राएँ उससे चिढ़ती हैं।

खेल शब्दों का

1. (क) मालती ने   कुसुम से
   क्योंकि कुसुम ने पूछा था कि वह तेज़ी से कहाँ भागी जा रही है।

   (ख) लता ने   मालती से
   क्योंकि मालती ने उसका मज़ाक उड़ाने पर क्रोध किया था।

   (ग) मुख्याध्यापिका ने   सुलेखा से
   क्योंकि सुलेखा द्वारा निर्मला का उपनाम 'भीमसेनी' और 'तोती' कहने पर वहाँ बैठी छात्राएँ हँसने लगी थीं।

   (घ) सुलेखा ने   मुख्याध्यापिका से
   क्योंकि मुख्याध्यापिका ने सुलेखा को आदेश दिया था कि निर्मला द्वारा बताए गए उन उत्तरों को लिखती जाए जो वह निर्मला से पूछ रही हैं।

   (ङ) लता ने   मुख्याध्यापिका से
   क्योंकि निर्मला ने मुख्याध्यापिका से शिकायत की थी कि वहाँ बैठी लड़कियाँ उसे देखकर हँस रहीं हैं और उसे चिढ़ा रही हैं।

(च) निर्मला ने मुख्याध्यापिका से
क्योंकि मुख्याध्यापिका ने उससे कहा था कि वह दो महीने के स्कूल अवकाश में शिमला जा रही हैं। यदि वह चाहे तो उनके साथ चल सकती है।

2. क्रोध - शाँत हानि - लाभ
दोषी - निर्दोष शांति - अशाँति
अंदर - बाहर हलकी - भारी
हँसना - रोना दंड - पुरस्कार

3. क्रोध - गुस्सा, रोष प्रातः - सुबह, भोर
बेटी - पुत्री, कन्या माँ - माता, जननी
घर - निवास, आवास स्कूल - विद्यालय, पाठशाला
लड़की - बालिका, कन्या समुद्र - सागर, सिंधु

4. होशियार छात्र बड़ा घर
आठवीं कक्षा लंबी नदी
रेशमी पर्दा ऊँचा पहाड़
सुंदर लड़की भीड़-भाड़ वाला शहर
बड़ी मेज शीतल समीर

5. बच्चों को पढ़ाने वाला - अध्यापक
जिसका स्वास्थ्य अच्छा हो - स्वस्थ
जो विदेश से आया हो - विदेशी
जो करने योग्य न हो - अकरणीय
थोड़ा ज्ञान रखने वाला - अल्पज्ञ
इतिहास का ज्ञाता - इतिहासकार
जो पीछे चलता है - अनुगामी
जिसमें ममता न हो - निर्मम
जो सामने न हो - परोक्ष

6. (क) भी - समीर घूमने जाने लगा तो काजल भी जाने की जिद करने लगी।
(ख) तो - मैंने भी तो यही उत्तर दिया था।
(ग) तक - जब तक मैं न आऊँ, जाना मत।
(घ) मत - अध्यापिका ने छात्राओं से कहा कि शोर मत मचाओ।
(ङ) भर - नर्तक संगीत की धुनों पर जी-भरकर थिरके।

अभ्यास प्रश्न पत्र -1

1. (क) बादल (ख) पिता (ग) तमिल (घ) भ्रमर (ङ) विशेषज्ञ
2. (क) चंद्रमा की चाँदनी शीतलता बरसाने के लिए कोई विशेष जगह नहीं ढूँढ़ती। उसके लिए सभी जगह समान है।
   (ख) लंचबॉक्स खोलने पर उसमें से धूल-मिट्टी निकली।
   (ग) कलाम के पिता बुद्धिमानी और उदार व्यक्ति थे।
   (घ) जालियाँ वाला बाग खून से सना हुआ बताया गया था।
   (ङ) भाग्यवाद की प्रधानता होने के कारण भारतवर्ष में पुरुषार्थ का ह्रास दिखाई देता है।
3. **प्रसंग** - प्रस्तुत पंक्तियाँ दीप्ति गुप्ता द्वारा रचित "निश्छल भाव" कविता से ली गई हैं। इस कविता के माध्यम से वे बताना चाह रही हैं कि हमें जिसने जीवन दिया है, वह किसी के साथ भेदभाव नहीं करता अर्थ - सूरज की सुनहरी धूप किसी के साथ भेदभाव नहीं करती वह देर तक मंदिर पर ठहरती है, उसके बाद मस्जिद पर छा जाती है। शाम ढलने पर गुरुद्वारे की दीवारों को छूते हुए गिरजाघर की चोटी को चूमकर चली जाती है। कहने का तात्पर्य है कि सूरज की धूप के लिए मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर, आदि में कोई भेद नहीं है।
4. मेरे अंदर एक चाँद है, जिसकी रुपहली चाँदनी
   में मस्जिद, मंदिर, गिरजाघर और गुरुद्वारे
   धरती पर एक हो जाती है।
   उनकी सद्भावनापूर्ण परछाइयाँ,
   देती हैं प्रेम की दुरहाइयाँ।
5. बादल - मेघ घन
   जल - पानी नीर
   हवा - वायु समीर
   चाँद - शशि इंदु
   सूर्य - दिनकर दिवाकर
   धरती - धरा जमीन
6. (क) जिसे, उसे - संबंधवाचक सर्वनाम
   (ख) किसने - प्रश्नवाचक सर्वनाम
   (ग) कुछ - अनिश्चयवाचक सर्वनाम
   (घ) यह - निश्चयवाचक सर्वनाम
7. (क) सहायता - हमें सदैव गरीबों की सहायता करनी चाहिए।
   (ख) आशीर्वाद - मोहन के पिता जी ने उसे सफलता का आशीर्वाद दिया।
   (ग) सांत्वना - छात्र के परीक्षा में असफल होने पर अध्यापक ने उसे सांत्वना दी।
   (घ) रक्षा - हमारे देश के वीर सैनिक देश की रक्षा के लिया तत्पर रहते हैं।
8. (क) महा + आत्मा (ख) सूर्य + उदय (ग) सत् + आचार
   (घ) भ्रष्ट + आचार

अभ्यास प्रश्न पत्र –2

1. (क) मुलतान में (ख) पाप (ग) सुंदर (घ) यज्ञ
   (ङ) (पुस्तक से यह पाठ हटा दिया गया है।)
2. (क) दुर्गादास एक अच्छे और अनुभवी वैद्य थे।
   (ख) हेमराज का रंग-रूप साधारण बालकों-सा ही था।
   (ग) जो गरीब के हित के लिए कार्य करे, वे बड़े लोग होते हैं।
   (घ) सेठ जी ने चौके को ठीक तरह जमाने के लिए उसमें लगे कुंदे को उठाया तो नीचे तहखाने की सीढ़ियाँ दिखाई दी।
   (ङ) (पुस्तक से यह पाठ हटा दिया गया है।)
3.

	विशेषण	विशेष्य
(क) मियादी बुखार	बुखार	मियादी
(ख) सुहानी ऋतु	ऋतु	सुहानी
(ग) तेज़ हवा	हवा	तेज़
(घ) साधारण दवा	दवा	साधारण
(ङ) अनुभवी वैद्य	वैद्य	अनुभवी

4. मित्रता - शत्रुता   सत्य - असत्य   दुष्ट - सज्जन
   गरीब - अमीर   ठंडा - गर्म   बुरी - अच्छी
5. अवस्था - जीर्णावस्था   अवस्था - दीनावस्था   अवस्था - वृद्धावस्था
   अवस्था - वाल्यावस्था   अवस्था - रुग्णावस्था
6. (क) रहीम जी कहते हैं, जो गरीबों की मदद करते हैं, वे महान होते हैं। बेचारा सुदामा श्री कृष्ण की मित्रता के लायक कहाँ था। फिर भी उन्होंने सुदामा से बचपन की मित्रता पूरी तरह निभाई। उसकी मदद की। यह श्रीकृष्ण का बड़प्पन था।
   (ख) रहीम जी कहते हैं कि जिनमें बड़प्पन होता है, वे अपनी बड़ाई कभी नहीं करते। जैसे हीरा कितना भी अमूल्य क्यों न हो, कभी अपने मुँह से अपनी बड़ाई नहीं करता।
7. (क) की (ख) के (ग) की (घ) का (ङ) की
8. मंतरी - मंत्री   दवानल - दावानल   तलास - तलाश
   पुरुश - पुरुष   परान - प्राण   परस्ताव - प्रस्ताव
   तपसया - तपस्या   देसाटन - देशाटन   परजा - प्रजा